अभागी तोके ते चुआं अकरमी, जे न पसां तोमें हाल।
सत दाण तोके चुआं सुहागी, जे करिए कीं कीं भाल।। ११ ।।

हे जीव! तुझे पापी कहूं या अभागा कहूं। तेरी हालत को बदलते नहीं देखती हूं। यदि तू अपनी थोड़ी सी संभाल कर ले, तो तुझे सौ बार सुहागी (सौभाग्यशाली) कहूंगी।

।। प्रकरण ।। १५ ।। चौपाई ।। ३५२ ।।

वी वलामणी

मूंजा जीव सुहागी रे, हाणें जिन छडिए पिरी पेर।
वभेरकां तो कारणे, पिरी आया हिन वेर।। १ ।।

हे मेरे सुहागी जीव! इस बार प्रीतम के चरणों को नहीं छोड़ना है। इस बार दुबारा तेरे वास्ते प्रीतम आए हैं।

पिरिए संदा गुण संभारे, झल्ल तूं पिरिए पेर।
सांणे तोके सुख पुजाइंदा, वेओ कोठे ईंय केर।। २ ।।

प्रीतम के गुणों को याद कर और उनके चरणों को पकड़ ले। वह तुझे सुख से घर (परमधाम) पहुंचा देंगे। इस प्रकार से तुझे कौन बुलाएगा?

खिल्ली कूडी कर गालडी, सुजाण पोतेजा पिरी।
तोजे काजे आप विधाऊं, विनी भेरां न्हार कीं।। ३ ।।

हंसकर, रोकर बातें कर तथा अपने प्रीतम की पहचान कर। तेरे वास्ते ही धनी दूसरी बार आए हैं। तू देखता क्यों नहीं?

सजण ए कीं छडजे, तूं तां न्हार केडा आईन।
पिरिए तोसे पाण न रख्यो, से न संभारजे कीं।। ४ ।।

ऐसे प्रीतम को कैसे छोड़ा जाए? तू उनको देख वह कैसे हैं? धनी ने तुझसे कुछ छिपा नहीं रखा है। उनको क्यों याद नहीं करता?

कोड करे तूं केड बांधीने, थी पिरिए जे पास।
सिपरी तूं सुजाण पांहिंजा, छड वेओ मंडे साथ।। ५ ।।

तू खुशी से कमर कसकर प्रीतम के पास जा। तू अपने प्रीतम की पहचान कर और दूसरों का साथ छोड़ दे।

पाणजे साथ के परमें चोयज, जे तो उकले वेण।
साथ तां कीं न सांगाय सुहागी, तोहे पाहिंजा सेण।। ६ ।।

अगर तुझे यह वाणी समझ में आ जाए तो अपने साथियों को भी बताना (कहना)। हे सुहागी जीव! साथ को तो कुछ भी पहचान नहीं है। फिर भी वह अपने साथी हैं।

।। प्रकरण ।। १६ ।। चौपाई ।। ३५८ ।।

Nijanand App